सम्पोषित ग्रामीण विकास में सहकारिता की भूमिका आवश्यक

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा 1920 में स्थापित गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात) के ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केन्द्र, रांधेजा. गांधीनगर तथा भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के संयुक्त तत्वावधान में एक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 21.22 दिसम्बर, 2018 को गुजरात विद्यापीठ के ग्रामीण परिसर रांधेजा में किया गया। इस राष्ट्रीय सम्मेलन का मुख्य विषय– सम्पोषित ग्रामीण विकास में सहकारिताओं की भूमिका था जिसमें देश के 14 राज्यों से आए विभिन्न शिक्षण व्यवस्था– संकाय क्षेत्रों से जुड़े 85 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संगोष्ठी में उद्घाटन व समापन सत्र के अतिरिक्त 5 तकनीकी सत्र भी रखे गए थे।

उद्घाटन के अवसर पर गुजरात विद्यापीठ के कुलसचिव. डॉ. राजेन्द्र खीमाणी, भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ, नई दिल्ली के मुख्य कार्यकारी श्री एन. सत्यनारायण, रामचन्द्र चन्द्रवंशी विश्वविद्यालय, पलामू झारखण्ड के कुलपति (प्रभारी) प्रो. (डॉ.) गुलाब सिंह 'आजाद', कोल्हाण विश्वविद्यालय, चाइवासा– झारखण्ड के प्रति–कुलपति प्रो. (डॉ.) रंजीतकुमार सिंह, गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली के श्री कुमार प्रशान्त, अन्तरराष्ट्रीय सहकारी संघ क्षेत्रीय कार्यालय– एशिया–पेसीफिक, नई दिल्ली के शोध अधिकारी श्री मोहित दवे, ग्रामीण प्रबंध अध्ययन केन्द्र के निदेशक एवं प्रबंघ तथा प्रोद्योगिकी संकाय डीन प्रोण् (डॉ) राजीव पटेल, संगोष्ठी संयोजक प्रो. (डॉ.) लोकेश जैन सभागार मंच पर उपस्थित थे। कार्यक्रम में पधारे सभी गणमान्य विद्वानों का स्वागत करते हुए कहा कि ग्राम विकास के लिए सहकारिताओं से बेहतर कोई उपाय नहीं है यदि इसमें गांधीजी के ग्राम स्वराज की संकल्पना को आत्मसात किया जाता है। आई.सी.ए. के श्री

मोहित दवे ने सम्पोषित विकास के ध्येयों को प्राप्त करने में सहकारिता के अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य को सामने रखते हुए आई.सी.ए. द्वारा किए जा रहे विविध प्रयासों के बारे में बताया तथा इस क्षेत्र में ग्रामीण युवाओं एवं संशोधकों को कैसे जोड़ा जाय इस संदर्भ में आई.सी.ए. की भूमिका के बारे में सहभागियों को जानकारी दी। कोल्हाण विश्वविद्यालय, चाईवासा (झारखण्ड) के प्रति कुलपति प्रो. रंजीतकुमार सिंह ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण हेतु सहकारिताओं में ग्रीन टेक्नोलोजी की ही नहीं अपितु ग्रीन साइकोलॉजी की भी जरूरत है ताकि हम कथनी करनी में समरूपता प्राप्त कर प्रकृति के प्रति संवेदनशील बन सकें। गुजरात विद्यापीठ के कुलसचिव डॉ. राजेन्द्र खीमाणी ने महात्मा गांधीजी के जीवन दर्शन, एकदशव्रत, रचनात्मक कार्यक्रम, सहकारिता के प्रति उनकी अटूट निष्ठा, जैविक एवं सामूहिक खेती के मुद्दों को समाहित करते हुए सहकारिता को संपोषित विकास के लिए अनिवार्य बताया। गांधी शांति प्रतिष्ठान के श्री कुमार प्रशांत ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अहिंसक समाज रचना हेतु गांधीजी के मौलिक चिंतन की प्रासंगिकता को तर्कबद्धता के साथ सदन के समक्ष बहुत ही रोचक ढंग से सामने रखा। उद्घाटन सत्र के अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ के मुख्य कार्यकारी श्री एन. सत्यनारायणजी के द्वारा सहकारिता आंदोलन के उद्गम एवं विकास पर प्रकाश डालने के पश्चात भारतीय सहकारी आंदोलन की प्रगति, उसकी समस्याओं, चुनौतियों, सम्पोषित ग्रामीण विकास में सहकारिताओं द्वारा निभाई जा रही अहम् भूमिका तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ द्वारा संचालित शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रमों, 43 सहकारी क्षेत्रीय शिक्षा परियोजनाओं आदि के द्वारा सम्पोषित विकास के लक्ष्यों को हासिल करने में अदा की जा रही भूमिका की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में कहा कि सहकारिता का मॉडल विकास का सर्वश्रेष्ठ मॉडल है और इसी के माध्यम से देश में सम्पोषित विकास की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है लेकिन इसके लिए भारत व राज्य सरकारों को सकारात्मक माहौल सृजित करना होगा एवं अपने सभी कार्यक्रमों व योजनाओं आदि को सहकारिताओं के माध्यम से ही चलाना होगा।

प्रथम तकनीकी सत्र के की–नोट स्पीकर एन.सी.यू.आई. के निदेशक डॉ. ए. आर. श्रीनाथ ने भारतीय राष्ट्रीय सहकारी संघ की सहकारिताओं के विकास में महती भूमिका से प्रतिभागियों को अवगत कराया तथा सहकारी शिक्षा के प्रचार–प्रसार में समन्वित सहयोग की अपील की।

द्वितीय तकनीकी सत्र के अध्यक्ष डॉ. पी. सेल्वाराजु ने तमिलनाडु की सांप की सफल सहकारिता की प्रस्तुति करते हुए सहकारी क्षेत्र के नूतन आयामों पर प्रतिभागियों को सोचने के लिए विवश कर दिया कि हर प्रांत में सहकारिता के जरिए लोक.उत्थान की बहुत संभावनाएं विद्यमान है जिन्हें एक अलग नजरिए से लीक से अलग हटकर देखने की जरूरत है। की–नोट स्पीकर डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने सहकारिताओं की वर्तमान स्थिति का अर्थशास्त्रीय आंकलन प्रस्तुत करते हुए बताया कि क्यों सहकारिताएं आर्थिक संवृद्धि के लक्ष्य को हासिल नहीं कर पा रही है।

तृतीय तकनीकी सत्र में डॉ. जे. पी. मिश्रा जी ने सहकारी क्षेत्र में समर्पित नेतृत्व के विकास की आवश्यकता पर बल दिया, सकारात्मक मनोवृत्ति की वकालत की और कहा कि इसके अभाव में सहकारिता खाका मात्र रह जायेंगी। आज देश को सहकारी क्षेत्र को योग्य समर्पित व ईमानदार नेतृत्व की तो आवश्यकता है ही किन्तु इसके साथ साथ ऐसे सक्रिय व अनुकरणीय सदस्यों की भी जरूरत है जो नेता के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सहकारिता के यज्ञ में अपने संकलित कर्मों की आहूति निष्ठा के साथ अनवरत देते रहें। की–नोट स्पीकर डॉ. कुमारी स्वर्णिम सिंह ने अपने वकतव्य में कहा कि सहकारिता महिला सशक्तीकरण का एक सशक्त माध्यम है। आज देश क लगभग 48 प्रतिशत आबादी महिला है। बदनसीबी यह है कि कार्यशील होने के साथ साथ यह उस प्रमाण में विकास की मुख्यधारा के साथ नहीं जुड़ सकी है, अपनी पहचान नहीं बना सकी है जितना इसका योगदान है।

चतुर्थ तकनीकी सत्र की अध्यक्षा श्रीमती अनीता पांडे, सहायक निदेशक, राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज संस्थान हैदराबाद ने सहाकारिता को ग्रामीण विकास की रीड़ बताते हुए कहा कि सहकारिता ही वे लोक माध्यम हैं जिस पर चलकर गांधीजी द्वारा बताये गए स्वराज को प्राप्त किया जा सकता है, ग्रामीण लोगों की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित किया जा सकता है। सहकारिता का भाव भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में रचा–बसा है। इतिहास गवाह है कि स्वरूप कुछ भी रहा हो लेकिन भारतीय समाज सदियों से परस्पर सहयोग से जीवन जीता आया है, परस्परोपग्रहो जीवानाम् के ध्येय वाक्य को अपनी जीवन–शैली बनाता आया है। इसलिए आर्थिक क्षेत्र में सहकारिता के मॉडल को सफल होना ही है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा प्रबंध संकाय की सदस्या डॉ. सुनीता तंवर ने अपने की–नोट वक्तव्य में बताया कि आज सहकारिताओं के संगठित विकास के लिए प्रबंधकीय तकनीकों एवं कुशलताओं को अपनाने की नितांत आवश्यकता हैं।

पंचम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता करते हुए सहकारिता एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र से लंबे समय से जुड़े प्रो. गुलाब सिंह 'आजाद' ने कहा कि हमारी सहकारिताएं सम्पोषित विकास के अधिकांश लक्ष्यों को पूरा करने में सक्षम हैं इनके जरिए भुखमरी, गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक आर्थिक विकास आदि समस्याओं का स्थायी समाधान प्राप्त किया जा सकता है। सत्र में की–नोट स्पीच देते हुए आसाम के डॉ. विद्युत वैश्य ने सहकारिता एवं खाद्यान्न सुरक्षा को लेकर आसाम में संचालित मत्स्य सहकारी समितियों का वर्तमान स्थिति का समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किया और पूर्वोत्तर राज्य के संदर्भ में चुनौतियों व सुझावों पर सार्थक विमर्श किया।

समापन सत्र का अध्यक्षता गुजरात विद्यापीठ के कुलनायक प्रो. (डॉ.) अनामिक शाह ने की जो रसायन शास्त्र में राष्ट्रीय कक्षा स्कॉलर रहे हैं लेकिन गांधीवादी विचारधारा की पृष्ठभूमि से जुड़े होने के कारण उनके वक्तव्य में सहकारिता की जमीनी हकीकत दृष्टिगोचर यत्र–तत्र सर्वत्र दिखाई दी। सहकारिता के जरिए ग्रामीण लोगों के विकास को लेकर उनकी संवेदनशीलताए विचार मंथन अनुकरणीय एवं प्रेरणात्मक था। समापन सत्र की विशिष्ट अतिथि श्रीमती अनीता पांडे जी ने कहा कि सहकारिता ग्रामीण विकास की वह धुरी है जिस पर लोक संगठन की आर्थिक रचनात्मक प्रवृत्तियों का संचालन इन लोगों के सामान्य हितों की सिद्धि के लिए किया जाता है जो अकेले रहकर कुछ भी कर पाने के काबिल नहीं थे तथा शोषित होने को विवश थे। सहकारिता में ईर्ष्या नहीं, प्रेम है, सभी के साथ सहयोग की भावना है तथा स्थानीय समस्याओं का वह स्थायी समाधान निहित है जिसकी परिकल्पना सम्पोषित विकास के लक्ष्य ड्राफ्ट 2030 के लिए की गई है। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि प्रो. गुलाब सिंह 'आजाद' ने कहा कि सहकारिता को लेकर लोगों को अपना नजरिया बदलना होगा। सहकारिता बेचारगी नहीं अपितु एक मजबूत विकल्प है, रास्ता कठिन जरूर है लेकिन इस पर चले बिना सम्पोषित विकास के प्रतिमानों को हासिल नहीं किया जा सकता। चुनौतियों की दृष्टि से देखें तो सहकारिता की अस्त–व्यस्त होती व्यवस्था की ओर ध्यान आकर्षित स्वाभाविक है लेकिन हमें यह नहीं भूलना होगा कि सहकारिता का विस्तार मानव जीवन के समस्त क्षेत्रों में है, कई क्षेत्रों के मात्रात्मक व गुणात्मक रुप से निजी क्षेत्रों के योगदान से कहीं अधिक है। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. लोकेश जैन ने कहा कि यह संगोष्ठी कई मायनों में सफल कही जा सकती है यथा– 14 राज्यों का प्रतिनिधित्व, 16 अन्तरराष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर के विद्वान वक्ता, 85 से अधिक प्रतिभागियों की रचनात्मक व सक्रिय भागीदारी एवं विचार विनमय का खुला वातावरण जिसमें अनथक विमर्श को पूरी ऊर्जा के साथ प्रारम्भ से अंत तक ले जाया जा सका।

कार्यक्रम के अंत में ग्रामीण प्रबंधन विभाग की संकाय सदस्य डॉ. मयूरी फार्मर ने सहभागी संस्था भारतीय राष्ट्रीय संघ एवं उसके पदाधिकारियों उदारहस्त सहकार, अतिथियों के अमूल्य समयदान व विचार–विमर्श, प्रतिभागियों के विद्वतपूर्ण अंशदान तथा विभागीय सदस्यों के कर्मशील योगदान एवं विभिन्न समितियों में विद्यार्थियों की कर्मनिष्ठ भूमिका के प्रति आभार व्यक्त करते हुए सभी को इस संगोष्ठी सफलता की बधाई दी।